डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. वी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

B.A. - Part - I
हिन्दी
Subsidiary & General

Date: 27-01-2022

Ajanta
Page No.
Date

जयशंकर प्रसाद के काव्यगत वैशिष्ट्य

1916 से 1936 तक बीस वर्षों का समय हिन्दी काव्य के इतिहास में 'छायावाद युग' कहा जाता है और जयशंकर प्रसाद को प्रथम छायावादी कवि या छायावादी काव्य का प्रवर्तक।

प्रसाद जी की राष्ट्रीय चेतना सीमित अर्थ में राष्ट्रवाद नहीं है। उनके काव्य में राष्ट्रीय जागरण ने सांस्कृतिक जागरण का स्वरूप धारण किया है। उनके काव्य-संग्रह 'लहर' की कविताएँ 'अब जागो जीवन के प्रभात' तथा 'बीती विभावरी जाग री' को पढ़कर स्पष्ट हो जाता है। वह राष्ट्र को जागरण का संदेश देते हैं, पर सीधे अभिधात्मक भाषा-शैली में नहीं, उनका संदेश अप्रत्यक्ष है, व्यंजना पर आधारित है—

"अब जागो जीवन के प्रभात।
वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे
ऊषा बटोरती अरुण गात।"

अथवा,

"बीती विभावरी जाग री
--- --- ---
तू अब तक सोई है आली
आखों में भरे विहाग री।"

राष्ट्रीय चेतना का स्थूल रूप उनके

Scanned by CamScanner

नाटकों में गीतों 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' तथा 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' में मिलता है।

'अशोक की चिन्ता' तथा 'अरी ओ करुणा की शांत कछार' में कवि भारत के उदात्त अध्यात्म एवं विचारों का स्तवन कर पाठकों के मन में राष्ट्र के प्रति गर्व-गौरव की भावना अंकित करना चाहता है। 'अशोक की चिन्ता' में कवि अशोक के माध्यम से सत्ता का लोभ, काम-क्रीड़ाओं और भोग-विलास को क्षणभंगुर बताकर शांति के पथ पर चलने का संदेश देता है—

जीवन कितना अति लघु क्षण
तृष्णा वह अनल शिखा बन
दिखलाता रक्तिम यौवन
... ...
संसृति के विद्युत पग रे
यह चलती है डगमग रे
मृदु दल बिखेर इस मग रे
वह बन जा करुणा की तरंग

प्रसाद जी गहरे स्तर पर शैव दर्शन से प्रभावित थे, तदनुरूप जीवन और जगत की व्याख्या भी की। समरसता सिद्धांत शैव दर्शन का सिद्धांत है, शिव तत्व और शक्ति तत्व का सामरस्य शैवदर्शन की आधारभूत मान्यताओं में है।

Scanned by CamScanner

'कामायनी' के रहस्य सर्ग में त्रिपुर की अवतार करते हुए कवियों ने समरसता का दार्शनिक विवेचन प्रस्तुत किया है। इच्छा, ज्ञान और कर्म कात्रित्व मानव-मन की शाश्वत प्रवृति तथा गतिविधि का मनोवैज्ञानिक लेखा है। अतः इसमें सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा ही मन को परिपूर्णता की स्थिति तक पहुंचाती है। जब तक इन तीनों में अभिन्नत्व नहीं होगा, आनन्द की प्राप्ति कैसे हो सकती है—

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके
यह विडम्बना है जीवन की॥

प्रसाद जी की विशेषता है कि वे लड़खड़ाती भाषा के बीच में अद्भुत बिम्बों का निर्माण करते हैं। यह विशेषता उनके काव्य सौंदर्य का सबसे सबल पक्ष है। 'कामायनी' का एक बिम्ब पुष्ट है:-

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों-बिजली का फूल
मेघ वन बीच गुलाबी रंग॥

Scanned by CamScanner